Chapter-4

चतुर्थ अध्याय

प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी का गुजरात राज्य में अजराड़ा घराने के प्रचार, प्रसार हेतु क्रियात्मक योगदान :

४-१ १९५० से महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी में क्रियात्मक योगदान

४-२ राजकोट स्थित संगीत, नाट्य, नृत्य महाविद्यालय में क्रियात्मक पक्ष में योगदान

४-३ गुजरात संगीत नाटक अकादमी द्वारा संचालित विभिन्न शिबिरों में योगदान

४-४ अहमदावाद बड़ौदा एवं विभिन्न आकाशवाणी केन्द्रपर तथा दूरदर्षन पर वादन प्रस्तुति

४-५ भारतीय संगीत का विश्व में स्थान और प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी का विदेश दौरा।

४-६ महात्मा गांधी इन्सटीट्युट मोरीशस में तबला विभाग में योगदान

चतुर्थ अध्याय

प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी का अजराड़ा घराने के प्रचार प्रसार हेतु क्रियात्मक योगदान :

पिछले अध्याय में हम देख चुके है की प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी का सन् १९५० में आगमन हो चुका है। इसकी विस्तृत जानकारी पिछले अध्याय में दी गयी है। अतः उस विषय को आगे बढ़ाते हुए यहाँ पर प्रो. सुधीरकुमारजी का अजराड़ा घराने का प्रचार,प्रसार हेतु जो क्रियात्मक योगदान रहा है उसकी संपूर्ण जानकारी इस अध्याय में दी गयी है। ऐसे देखा जाये तो सुधीरजी ने अपने उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहेब से गंडाबंधन किया तब शिष्य के पास से गुरु ने कसम दिलवाई थी कि यह विद्या किसी को सिखाओगे नही, किंतु सुधीरजी ने इसके विपरीत काम किया उसी समय आपने मन में प्रण किया था कि यह विद्या में सबको सिखाउँगा। अर्थात केवल गुजरात में ही नहीं बल्कि अजराड़ा घराना पूरे भारत वर्ष में तथा आन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी इसका प्रचार किया और असंख्य शिष्य वर्ग आपने तैयार किये। इस प्रकार प्रचार प्रसार में दोनों पक्ष ही प्रबल हुअे है।

(१) क्रियात्मक पक्ष (२) शास्त्र पक्ष।

इस अध्याय में क्रियात्मक पक्ष पर गहन अध्ययन किया गया है। क्रियात्मक दृष्टि से स्वतंत्र तबला वादन में साथ,संगत के माध्यम से जो प्रयास किये गये है उसकी पुष्टि की गयी है। प्रो.सुधीरकुमारजी न केवल राज्य स्तर पर अजराड़ा घराने के कलाकार थे बल्कि अंतर राष्ट्रिय स्तर के एक मुर्धन्य कलाकार थे। इस अध्याय में प्रो.सुधीरजी ने जो स्वतंत्र तबला वादन एवं साथ संगत के माध्यम से असंख्य कार्यक्रम किये है। उसीके छायांकनं चित्र क्रमशः देने का प्रयास किया गया है।

प्रो.सुधीरजी जैसे महान विभूति ने हिन्दुस्तान के जाने माने कलाकारों के साथ साथ संगत करके अजराड़ा घराने का प्रचार,प्रसार किया इसमें कोई संदेह नही है। शोधार्थी के मन में यह प्रश्न उठता है की यह प्रस्तुति किनकिन विधाओं में थी और इसकी जानकारी लेने के लिये प्रो.सुधीरजी से साक्षात्कार करके उनसे जानकारी प्राप्त की गयी। इसमें जो तथ्य सामने आये जो विषय से संबधित है उसे देने का प्रयास किया गया है।

प्रो.सुधीरजी से साक्षात्कार करने के बाद शोधार्थी को यह महसुस हुआ की आपने गायन,वादन,नृत्य एवं उपशास्त्रीय संगीत इन सभी विधाओ में अपना प्रभुत्व स्थापित किया था।

---

९८ साक्षात्कार प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी दि १८-७-२००७, २५-७-२००७

४-१ १९५० से महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटि में क्रियात्मक योगदानः

सन् १९५० में प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी की बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटीमें नियुक्ति हुई इसकी पुष्टि हम पिछले अध्याय में दे चुके हैं। परंतु प्रो. सुधीरजी पर शोध प्रबंध लिखने पर विचार किया गया तब शोधार्थी के मन में यह प्रश्न आया की प्रो. सुधीरकुमारजी की अतंर्गत बातें जानना जरुरी होगा। अतः गहन अध्ययन करने के बाद यह पता चला की प्रो सुधीरकुमारजी ने अजराड़ा घराने के प्रचार,प्रसार हेतु महत्वपूर्ण बडा योगदान दिया है। जिसपर शोधार्थी के मन में सर्व प्रथम संस्था का विचार आया जिसका नाम महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी,बड़ौदा, इस विश्वविद्यालय में जब प्रो. सुधीरजी सन १९५० में आये उस समय भी तबला विभाग की स्थिति उन्हें चितांजनक दिखाई देती थी अर्थात इस में बहुत कुछ बदलाव की आवश्यकता थी और यदि इस में बदलाव नहीं लाया गया तो युनिवर्सिटी की प्रथम उपकुलपति द्वारा मुझे बड़ोदा लाने का कार्य सार्थक नहीं होगा अर्थात स्वयं प्रो. सुधीरजी इस तथ्य को मानते थे कि बदलाव होना जरुरी है। अतः कालेज स्थित तबला विभाग के पाठय क्रम में संपूर्ण बदलाव लाने का प्रयास किया और उस में वह सफल भी हुए। इस बदलाव पर गहन अध्ययन किया और गुरुजी के साक्षात्कार करने के बाद शोधार्थी को यह अनुभव हुआ की

सन् १९५० में कई विद्वतजन इसी कालेज में उस्ताद के पद पर नियुक्त थे। परंतु वे पाठयक्रम में बदलाव लाना नहीं चाहते थे या कैसे बदलाव किया जाये इस पर कोई विचार विमर्श नही किया जाता था अपने विभाग का भविष्य क्या होगा इस पर कोइ चितंन नही था एसी दयाजनक स्थिति में हर ताल में जब रचना की गयी है तो हर ताल में या हर ताल का परिचय विद्यार्थीगण को प्राप्त करने हेतु पाठयक्रम में न केवल तालकी जानकारी प्राप्त हो अपितु उस ताल में स्वतंत्र तबला वादन भी इसी हेतु से उसे अभ्यास क्रम में रखागया। फल स्वरुप हर विद्यार्थी हर ताल से परिचित होने की क्षमता रखने लगा। इसी कालावधि के कई छात्र मिले उन में से श्री. निळकंठराव गुरव तथा श्री. प्रभाकर दाते इनका साक्षात्कार करने के बाद इस बात की पुष्टि होती है ।

प्रो. सुधीरकुमारजी का ऐसी महान संस्था में केवल अजराड़ा घराने का प्रचार,प्रसार करना लक्ष न था परंतु विद्यार्थी हर घराने से परिचित हो इसी कारण अभ्यास क्रम में हर घराने की प्रणाली रखने का कष्टदायक काम भी किया। आज यदि इस पर विचार करे तो यह दिखाइ देता है की प्रो. सुधीरकुमारजी ने बनाया हुआ अभ्यास क्रम उनके शिष्यो द्वारा आज भी

पढ़ाया जाता है । और जो भी वर्तमान परिवर्तन परिस्थिति के अनुसार हुआ है वह केवल प्रो. सुधीरकुमार के कहने से हुआ है ।

शोधार्थी को इस विषय पर गहन अध्ययन करने के बाद एक बात स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। सन १९८४ तक तबला विभाग में केवल बॅचरल ऑफ म्युजिक तक का ही अभ्यास क्रम था परंतु पं. नारायणराव पटवर्धन जैसे विख्यात गायक विभागीय अध्यक्ष होने के नाते प्रो. सुधीरकुमारजी के अनुमति के बाद ही मास्टर ऑफ म्युजिक का नया पाठयक्रम शुरु हुआ। इस पाठय क्रम को बनाने में भी प्रो. सुधीरकुमारजी की मदद ली गयी। यह सब देखते हुए एक बात पर निश्चित सुधीरजी एक विद्वान गुरु के साथ साथ एक विद्वान शिक्षक भी रहे।

---

९९ साक्षात्कार प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी दि १-८-२००७, १२-८-२००७

४-२ राजकोट स्थित संगीत नृत्य नाटक अकादमी :

प्रो. सुधीरजी ने न केवल अपने ही कॉलेज में अभ्यास का परिवर्तन किया बल्कि राजकोट स्थित संगीत, नाटक, नृत्य महाविद्यालय में भी अभ्यास का परिवर्तन किया शोधार्थी का कहना है कि प्रो. सुधीरजी ने न केवल बड़ौदा में ही अपना शिष्य परिवार बनाया बल्कि गुजरात के अन्य शहरों में भी अपना शिष्य परिवार निर्माण किया। राजकोट में श्री. परशुराम भोरवाणी जैसे स्वयं सिध्दहस्त कलाकार थे उन्होने स्वयं सुधीरकुमारजी से गंडाबंधन करके उनके प्रमुख शिष्यों में अपना स्थान बनाया, भोरवाणीजी जैसे महान कलाकार का कहना है कि राजकोट स्थित कालेज में जो परिवर्तन अभ्यास क्रम में लाया गया उसका सारा श्रेय प्रो. सुधीरकुमारजी को जाता है उनका और भी कहना है की केवल पाठयक्रम में या केवल शिष्य निर्माण करने से तबले का प्रचार, प्रसार नहीं होता है। इस पर विशेष ध्यान देते हुए प्रो सुधीरजीने इस कॉलेज के अतंर्गत कई बार कार्यशाला का आयोजन किया और इस कार्यशाला में कई बार प्रत्यक्ष रुप से विद्यार्थियों के साथ उनसे रचना बजवाने का अत्यंत कष्टदायक काम असानीसे करवाया यह वाद्य सिर्फ साथ संगत का वाद्य नहीं है इसका अपना अलग अस्तित्व है उसका एहसास सभी विद्यार्थीओं को करवाया फलतः आज भी इसी संस्था के तबला विभाग

के प्राध्यापक श्री. दवेन्द्र दवे अपने साक्षात्कार में इसकी पुष्टि करते हैं। देवेन्द्र दवेजी का कहना यह है कि प्रो. सुधीरजी एक अच्छे गुरु तो थे ही लेकिन साथ में एक महान तबला वादक, रचयिता एवं समीक्षक वक्ता भी थे। शोधार्थी यह बात दावे से कह सकता हैं कि हर दृष्टिसे गुरुजी अष्टपहलू कलाकार थे।

४-३ गुजरात संगीत नाटक अकादमी द्वारा संचालित विभिन्न शिबिरो में योगदान :

इसके अतंर्गत क्रियात्मक पक्ष की विभिन्न विधाओं में प्रो. सुधीरकुमारजी द्वारा क्रियात्मक पक्ष में योगदान के बारे में विचार विमर्श किया गया है। एवं उसे संग्रहित करके इस अध्याय में देने का प्रयास किया है। किंतु शोध ग्रंथ का जो मुख्य हेतु है कि प्रो. सुधीरकुमारजी का गुजरात में अजराड़ा घराने के प्रचार, प्रसार हेतु जो योगदान रहा है उसी मे से एक महत्व पूर्ण योगदान याने गुजरात स्थित एक गणमान्य संस्था "गुजरात संगीत नाटक अकादमी जो गुजरात सरकार द्वारा संचालित है और उनका कार्य है गुजरात में स्थित सभी प्रांतीय कलाकारो को अपनी कला प्रस्तुत करने के लिये मंच आमंत्रित करना। इसी संस्था ने शुरुआत में प्रो. सुधीरकुमारजी का सहयोग ले कर अजराड़ा घराने के प्रचार, प्रसार हेतु गुजरात स्थित अनेक प्रमुख शहरों में रखे गये

शिबिरों में अपना महत्व पूर्ण योगदान दिया, इस योगदान के फलस्वरुप सन १९८३ में प्रो. सुधीरकुमारजी को गुजरात राज्य सरकार द्वारा गुजरात संगीत नाटक अकादमी की ओर से पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसी अकादमी द्वारा वर्षो तक शिबिर एवं कार्यशाला का आयोजन हुआ तथा इन कार्यशाला में अपना महत्व पूर्ण योगदान दिया, फलतः प्रो. सुधीरजी का नाम तो हुआ ही साथ ही उनका शिष्य परिवार भी गुजरात में उतना ही हुआ। प्रो. सुधीरजी का साक्षात्कार करते समय यह तथ्य सामने आये, सन १९५० से लेकर १९६५ तक अजराड़ा घराने को विकसित करने के लिए एक अच्छी शुरुआत शुरु हुई और आज पूर्ण रुप से विकसित हुई है। इस में कोई संदेह नहीं है। एक विशेष बात पर दृष्टिपात्र करें तो एक तथ्य सामने आता है कि इसी संस्था द्वारा पं. ओंमकारनाथ प्रतियोगिता का आयोजन हर साल किया जाता है इसी प्रतियोगिता में प्रो. सुधीरजी के अनेक शिष्यों ने भाग लिया और प्रथम क्रमांक प्राप्त करने का सौभाग्य मिला है। गुरुजी के शिष्यों के अनेकों शिष्यगण द्वारा आज तक यह सिलसिला चला आ रहा है। इन सभी पर दृष्टिपात करें तो गुजरात में अजराड़ा घराना कितना प्रबल है यह बात स्पष्ट रुप से दिखाई देती है। यह सभी जानकरी मेरे गुरुजी प्रो. सुधीरजी से साक्षात्कार द्वारा पायी गयी है और यह सच है इस में कोई संदेह नहीं है।

---

१०० साक्षात्कार प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी दि १८-८-२००७, २२-८-२००७, २५-८-२००७

४-४ अमदावाद बडोदा एवं भारत के विभिन्न आकाशवाणी केद्रों तथा दुरदर्षन पर वादन प्रस्तुति :

पिछले अध्यायों में हम देख चुके है कि प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी को एक अनोखी सिद्धि प्राप्त हुई थी और इस सिध्दि से पुरे गुजरात राज्य को और साथ,साथ बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी को भी प्रसिद्धि मिली थी ऑल इन्डिया रेडियो ने प्रो. सुधीरजी को बिना ऑडीशन लिये ए+ ग्रेड कलाकार का बहुमान किया था। इस तरह का सौभाग्य हर कलाकार को नसीब नही होता। जब किसी को राष्ट्रीय स्तर पर सरकार द्वारा पुरस्कार प्राप्त हो, इससेही ज्ञात होता है कि सुधीरकुमारजी अपने क्षेत्र में कितने उच्च पद पर आसीन थे। जब सुधीरकुमार सक्सेनाजी ने संगीत क्षेत्र में पदार्पण किया तब पहला कार्यभार उनका कोलकोता रेडियो स्टेशन से शुरु हुआ। उसी स्टेशन पर उन्होने बडे कलाकारो के साथ संगत की थी और तबला विषय पर अनेक बार वार्तालाप भी किये थे। उसके बाद आपका तबादला दिल्ली आकाशवाणी केन्द्र पर हुआ, उस समय आपके साथ उस्ताद अल्लार खाँ जैसे नामी कलाकार भी थे। सुधीरजी सिर्फ शास्त्रीय संगीत के साथ ही संगत करते थे एसा नही परंतु उनको वहाँ पर उपशास्त्रीय संगीत के साथ भी बजाना होता था। सुधीरजी को उस समय कई नामी कलाकारों के साथ बजाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था उसमें श्री मन्नाडे, तलत महमुद जैसे

महान कलाकारो के साथ एवं गझल कलाकारों के साथ भी उन्होने साथ संगत की थी। सुधीरजी ने आकाशवाणी पर सिर्फ कार्य पक्ष का कार्यभार नही संभाला था बल्कि उन्होने शास्त्र पक्ष भी अनेक बार संभाला जिसके फलस्वरुप तबला विषय पर बातचीत एवं प्रश्नोत्तरी की थी। घराना विषय के चर्चा सत्र के अवसर पर दिल्ली आकाशवाणी केन्द्र पर हिंदी में की हुई बातचित भारत की मुख्य भषाओं में उस का अनुवाद करके एक ही समय पर चर्चा सत्र का प्रसारण हुआ था। याने मराठी, गुजराती, कन्नड, तमिल इत्यादि भाषाओ में प्रसारित किया गया था। अहमदाबाद, वडोदरा केन्द्र परसे घराना और उनकी वादन शैली इस पर भी चर्चा एवं वादन हुआ था। इसी तरह से शास्त्र पक्ष एवं क्रियात्मक पक्ष पर अधिकार होने के कारण आकाशवाणी द्वारा उनकी पहचान पूरे भारत वर्ष में हो गयी थी।

१०१ साक्षात्कार प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी दि २८-८-२००७, ३०-८-२००७

४-५ भारतीय संगीत का विश्व में स्थान और प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी का विदेश दौरा :

कई विदेशी संगीत के इतिहास कारों ने भारतीय संगीत को अशुध्धरीतिसे वर्णन कर संगीत कलाको अभिशापग्रस्त भी किया है। किंतु एसे कई विदेशी इतिहासकार हुए जिन्हों ने भारतीय संगीत को पहचाना, इन विदेशी इतिहासकारो में कर्नल पॅटरनीश, हिपकीन्स, कॉलोमेन्टस्, डेबल फॅक्स स्ट्रागवेश, कॅप्टन विलर्ड आदि उल्लेखनीय है। इन इतिहासकारोनें पूर्ण प्रतिभा का उपयोग कर इस कलापर पडे हुए अज्ञान का आवरण हटाया। इसमें कैप्टन विलर्ड ने "एट्टाइस ऑन दी म्युजिक ऑफ हिन्दुस्तान" नामक ग्रंथ की रचना १८१४ में की। भारतीय संगीत का उचित मूल्यांकन इसी ग्रंथ से संभवित हुआ। वे पेशेसे सैन्य विभाग में काम करते थे। भारतीय संगीत का इतिहास इन विदेशी ग्रंथकारो को कृतज्ञा पूर्वक याद करता रहेगा। इन्हीं लेगोसें भारतीय संगीत का सच्चा इतिहास समुद्र पार अन्य देशों में पहुचाँ, और इन जिज्ञासुओं द्वारा संगीत का तलनात्मक अध्ययन हुआ।

इस कालके बाद भारतीय संगीत गगन में दो नक्षत्र उदीपमान हुए। एक ने संगीत के कलापक्ष की और दूसरे ने शास्त्र पक्ष की आजीवन सेवा की। उनमें से,थे एक पं.भातखंडेजी और दूसरे पं.पलुस्करजी। इनका मूल्यांकन शब्दो में करना संभव नहीं है। इस समय भारत पर अंग्रेजों का शासन था।

देश स्वतंत्र होने पर भारतीय सरकारने सांस्कृतिक विभाग शुरु किया और एक नया विभाग बनाया गया। भारतीय कला को अधिक महत्व मिलने लगा और भारतीय संगीत क्या है इसका प्रचार करने के लिये कई विद्वान कलाकारों को भारत से विदेश भेजा गया।

प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी का विदेश दौरा :

भारतीय सांस्कृतिक संबन्ध परिषद (आई.सी.सी.आर) द्वारा बड़ौदा रहने वाले प्रा.सुधीरकुमार सक्सेनाजी जो महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी बड़ौदा में प्राध्यापक थे जो संगीत के कलापक्ष और शास्त्र पक्ष दोनों में माहिर थे उनका चयन किया गया साथ में कलकत्ता की कल्याणी रॉय जो सितार बजाती थी। उनका भी चयन किया गया।

आई.सी.सी.आर ने महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी के ऑफिस में फोन पर कहा की भारत के जानेमाने कलाकारो मे से सुधीरकुमारजी का चयन किया गया है। उससमय के सांस्कृतिक मेत्री श्री.हुमायुँ कबीर थे उन्होनें उनका चयन किया है। तारीख तय होनेपर सर दिल्ली पहुँचे वहाँ उनका पासपोर्ट बनवाया गया और सर रुस की और चल पड़े। सर कहते है की सरकार द्वारा उन्हे तीन पौंड खर्च करने के लिये दिये थे। सर अफघानिस्थान हो कर रशिया पहुचे। भारतीय कलाकारो को वहाँ की सरकार ने भारतीय

कलाकारो अच्छे होटेल में ठहराया था और उसका नाम युक्रेन था और वो नौ मंजिल उँची इमारत थी। रूसी सरकारने दोनों कलाकारों को दस,दस रुबल रोज के खर्चे के लिये दिये थे और रोजका खर्चा उसमें से करना पडता था। सर ने बताया कि वहाँ सख्ताई बहुत थी, होटेल रात नौ बजेतक ही खुले रहते थे सिर्फ कॉफी शोप ही रातभर खुले रहते थे।

एक दिन ऐसा ही हुआ एक जगह उनका कार्यक्रम देर तक चला तो रात का खाना नही मिल पाया सिर्फ कॉफी पी कर सारी रात रहेना पड़ा। कलाकार के जीवन में ऐसा कभीकभी होता है। सर ने वहाँ अनेक कार्यक्रम दिये। स्कुली बच्चोसें लेकर संगीत विद्वान कलाकारों के सामने बड़ीबड़ी हस्तिओं के सामने भारतीय संगीत को प्रस्तुत किया। कई प्रश्नोत्तर हुए, एक बार एक विद्वान ने पूछा इस सितार को कितने तार हैं? कल्याणी रॉय ने जवाब दिया सतरह,अठारह क्या आप सभी तारों का उपयोग एक साथ में करती हो? सर ने तुरंत जवाब दिया जिस प्रकार की जरूरत पडती है उतना ही उपयोग में लेते है। वहाँ की जनता ने कभी कोई वाद्य उंगलियोसे बजाते हुए नहीं देखा था। तबला उंगलियों से बजता है और वह भी अलग प्रकार की लय में याने विलंबित से लेकर दृत लय में इन सभी प्रकारें के देखकर समग्र श्रोता वर्ग अचरज में पडता था। यद्यपि वहाँ भी चर्म वाद्य का उपयोग

होता ही था किंतु सभी वाद्य स्टिक से याने सारिका से बजाते थे। सर संगीत की सभी बातचीत अंग्रेजी में करते थे उनको एक दुभाषिया दियागया था वो उसे रुसी भाषा में अनुवादित करता था।

एक बार सर एक कार्यक्रम देखने गये तो वहाँ के कलाकार ने पूछा हमारा कार्यक्रम कैसा लगा? सर ने कहा अच्छा लगा। उन्होंने फिर प्रश्न किया आपके भारतीय संगीत और हमारे संगीत में क्या फर्क है? सर ने तुरंत कहा पाश्चात्य संगीत नोटेशन पर आधारित होते है इस कारण उसमें कोई बदलाव नहि ला सकते और हमारा संगीत सार आधारित होता है। इसपर अधिक प्रभाव डालने के लिये सर ने उसी कार्यक्रम में उनसे कहा इस कार्यक्रम को क्या कहते है? इसे ऑर्केस्ट्रा कहते है; इस में करीब ६०० कलाकार भाग लेते है। बारह सालके बच्चे से लेकर युवान और सत्तर साल के बूढे भी इसमें भाग लेते हैं। सर ने पूछा ये सभी कलाकार जो चीज बजाते हैं वह कितनी पुरानी है। यानी कितने सालोंसे बजती है? उन्होने कहा की सेकडों सालोंसे, तब सर ने कहा, इसका अर्थ यह हुआ कि इतना समय और इतनी उम्र हो गयी तो भी यह सभी वादक किसीने बनायी हुई चीज को ही आज तक घुट रहे है। ये कलाकार कैसे हो सकते है ये तो सिर्फ संगीत चक्र की आरी मात्र है।

संगीत कला में इतने वर्ष और इतनी उम्र में यदि अभिव्यक्ति दिखाने में स्वतंत्रता न मिले तो यह बहुत बड़ी ना इंसाफी है। इससे भारतीय संगीत यहाँ पर अलग दिखाई देता है। इसमें प्रत्येक वादक संगीतकार निजी अभिव्यक्ति के लिये स्वतंत्र है। प्रत्येक राग रागिनी के नियत स्वर तो हमारे यहाँ है। तो भी स्वरोंका अवलंबन लेकर एक ही चीज अलग-अलग गायक, वादक गाते है बजाते है। राग भले एक हो तो भी सुर विहार स्वतंत्र होनेके कारण श्रोंताओं को वैविध्य पूर्ण बजाकर, गाकर दिखाते है और सुनाते है। हमारे यहाँ प्रत्येक संगीतकार वादक नियत स्वरों का अवलंबन करते हुए भी, उनके संगीत का अविष्कार का अनुबंधन उनके व्यक्तिगत साधना के साथ जुडा है। और साधना को व्यक्त करने के लिये वे सुर विहार का आश्रय लेते है। हमारा संगीत स्वरलिपि बद्ध परंपरा से मुक्त हो कर आगे बढ़ता है। स्वतंत्रता के बिना किसी संगीत में रागों के मूलभूत स्वरोंको अवलंबन लेते हुए भी कलाकार की अभिव्यक्ति स्वतंत्रता पर सविशेष भार देने में आया है। पं. ओंमकारनाथजी द्वारा गायी हुई भैरवी और किसी खाँ साहब द्वारा गायी हुई भैरवी मूल स्वरोको अवलंबन होते हुए भी भिन्न भिन्न स्वरुप लेती है। और समर्थ गायक एक ही चीज को एक ही राग रागिनी में गाते हुए भी उसे वैविध्य पूर्ण आनंदपूर्ण स्वरुप दे सकते है। यह है भारतीय संगीत की

विशेषता। इसपर गौर किया जाय तो सर ने जो बात बतायी इसमें ही भेद स्पष्ट हो जाता है।

सर ने वर्तमान समय में संगीत को लिपिबध्ध किया जा रहा है यह बात ख्याल रखने जैसी है। यहाँ यह बात स्पष्ट है कि सर शस्त्र पक्ष और कार्य पक्ष दोनों पर अपना प्रभुत्व रखते थे। तथा हाजर जवाब देने की क्षमता रखते थे। इसी तरह सर ने वहाँ के अनेको कार्यक्रमों का वर्णन किया।[१०३]

सर ने एक बहुत महत्वपूर्ण बात बताई की समय का महत्व वे लोग समझते हैं और सही तरह से उसका वो पालन भी करते है। हर बात मे परफेक्शन देखने को मिलता है उसे दाद दे कर सराहना भी चाहिये। सर एक जगह नृत्य देखने गये वहाँ उसे बैले डान्स कर रहे थे इसमें कई कलाकार भाग लेते है तथा स्त्री, पुरुष साथ में नृत्य करते है। डान्स एक बडें से हॉल में चल रहा था उस कार्यक्रम का लाइटिंग इफेक्टस का कार्य अंडरग्राउंड से कार्यरत होता था। नृत्य न देखते हुए भी लाईट इफेक्टस् इतने परफेक्ट थे कौनसे समय कौनसा लाईट कौनसे स्पोट पर गिरना चाहिये और वह भी नृत्य न देखते हुए भी अलग अलग प्रकाश डालना यह तो सिर्फ परफेक्शन से ही सिध्ध हो सकता है। याने हरेक भारतीय कलाकार को

समय का बंधन हो और वो समय के साथ चले यह एक अत्यावश्यक वस्तुस्थिति है।

सर को जहा जहा घुमाया याने दर्शनीय स्थल थे, वहाँ जाकर उन्होंने देखा कि हरेक जगह अनुशासन होता था, कोलाहल कहीं भी सुनाई नही देता था। चाहे वो रास्ता,बजार या बगीचा हो शोरबकोर बिलकुल नहिं होता था। सर ने कहा की रुस में ज्यादा ठंड होने के कारण रेल्वे प्रवास में गददे और कंबल भी देते थे। वहाँ के बगीचे, देखने लायक है। सर ने बताया कि वह एक चित्र प्रदर्शनि देखने गये। प्रदर्शनी एक बडे हॉल में थी इसमें एक चित्र फ्रेंच और रुस के बीच में हुई लडाई के थे। और सभी चित्रो को बीच में खड़े रहकर देखना पडते है देखते समय ऐसा लगता है कि सचमुच हम युध्धक्षेत्र में ही खड़े है।

---

१०२ साक्षात्कार प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी दि २-९-२००७, १३-९-२००७
१०३ पंडित शिवकुमार शुक्ला फेलीशिएशन मोमेन्टो

रशीयन सांस्कृती मत्रालय के अधीकारीओ के सामने प्रस्तुती

रशीयन सांस्कृतीक अधीकारी के साथ गपशप

कल्याणी रॉय के साथ प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी, रशिया में प्रस्तुती

रशीया मे कल्याणी रोय के साथ सुधीरजी और सांस्कृतीक मंत्रालय के अधीकारी

४-६ महात्मा गांधी इन्स्टीटयुट मोरेशिअस में तबला विभाग में योगदान :

शोधार्थी द्वारा प्रो .सुधीरकुमारजी के साथ साक्षात्कार करते समय उन्होने किस तरह से अजराड़ा घराने का प्रचार,प्रसार गुजरात में एवं राष्ट्रीय स्तर पर किया उस पर चर्चा की। भारत सरकार द्वारा अपनी सांस्कृतिक धरोहर विश्वपटल पर रखने के लिये कई विकसित देशों में संगीत के प्रचार,प्रसार में कई देशों के साथ प्रयास किया था उसी संदर्भ में मोरेशिअस नामक देश में हिन्दुस्तानी संगीत सिखाने के लिये अपनी कुशलता का परिचय दिया। ३५ साल पहले मोरेशिअस में एक इन्स्टीटयुट खुला था इस के अंतर्गत तबला विषय का ज्ञान देने के लिये तबला विभाग खोला गया था और किस तरह उसका विकास होगा उसपर सुधीरजी के साथ विचार विमर्श करते समय उन्होंने कहा की बड़ोदा के म्यूजिक कॉलेज में दूसरे देशों के छात्र हिन्दुस्तानी संगीत सिखने के लिये आते थे। इसमें फ्रान्स, जर्मन, जापान, मोरेशियस, इंग्लंड, अमेरिका इत्यादी देशो में से विद्यार्थी कॉलेज में दाखिल होते थे इसमें मोरेशीयस के छात्र श्री इन्द्रदत्त दिरपोल १९६७-७१ तक म्युजिक कालेज में दाखिल हुए बाद में अपना शिक्षण पुर्ण करके सुधीरजी के शिष्य बने और उनके पास से सिखकर दिरपोलजी मोरेशीअस जा कर इसी इन्स्टीट्युट में कार्यभार संभाला इसी समय से मोरेशीअस में अजराड़ा

घराने का तबला बजने लगा। इन्स्ट्टीट्युट के मेनेजमेन्ट ने सुधीरजी को वहाँ बुलवाकर पुरे तबला विभाग का अभ्यास गुरुजी से बनवाकर आगे का कार्य संपन्न किया। कई बार सुधीरजी को परीक्षा लेने के लिये वहाँ पर आमंत्रण देते थे। आज पुरे मोरेशीअस में अजराड़ा घराने को मिनी अजराड़ा घराने के नाम से जाना जाता है। इसका संपूर्ण श्रेय सुधीरकुमार सक्सेनाजी को जाता है। मिनी मोरेशीअस अजराड़ा घराने की परंपरा का चार्ट संलग्न है ।

१०४ साक्षात्कार प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी दि २२-९-२००७, २७-९-२००७

THE GENEALOGY OF THE "MINI MAURITIAN AJRADA"

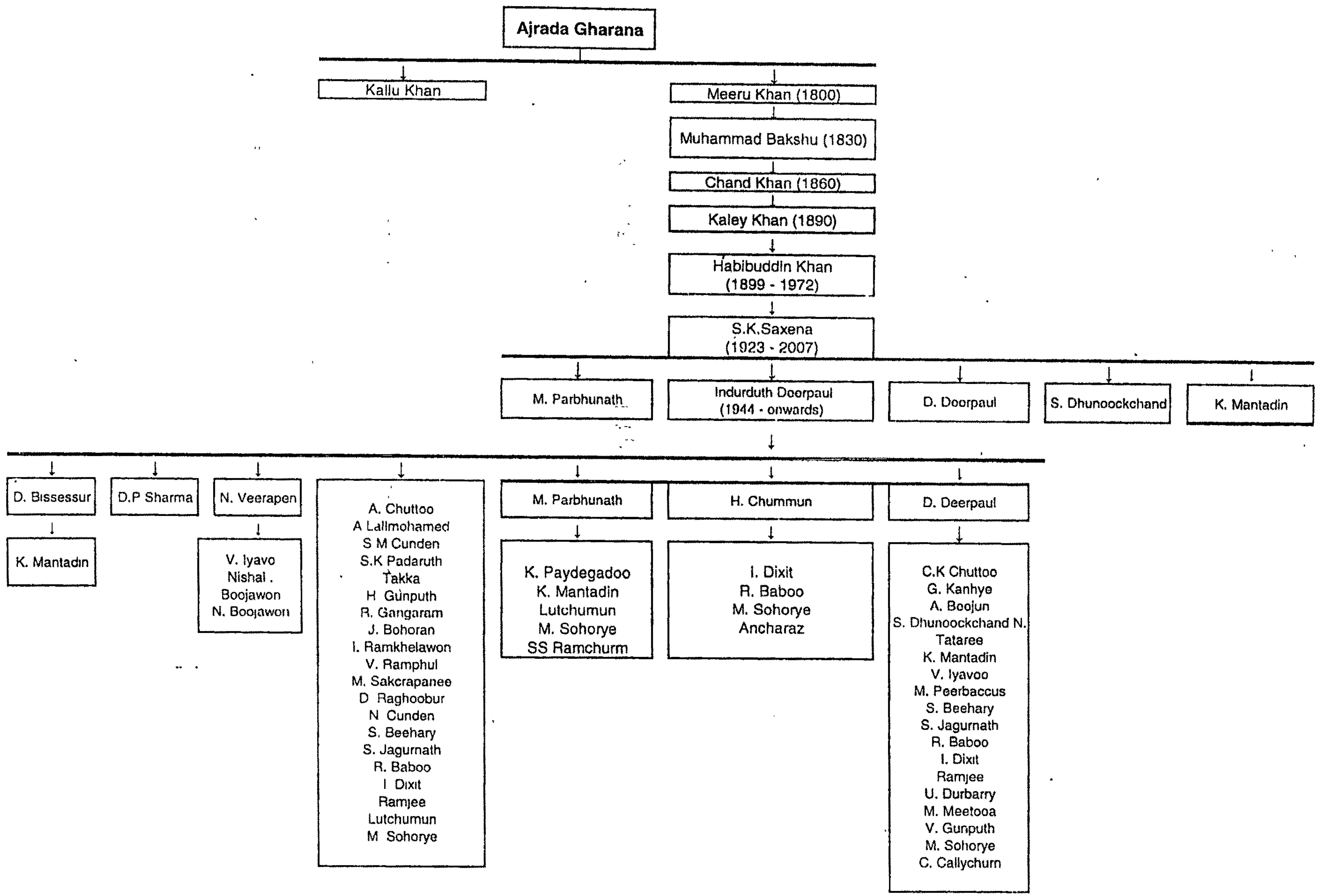

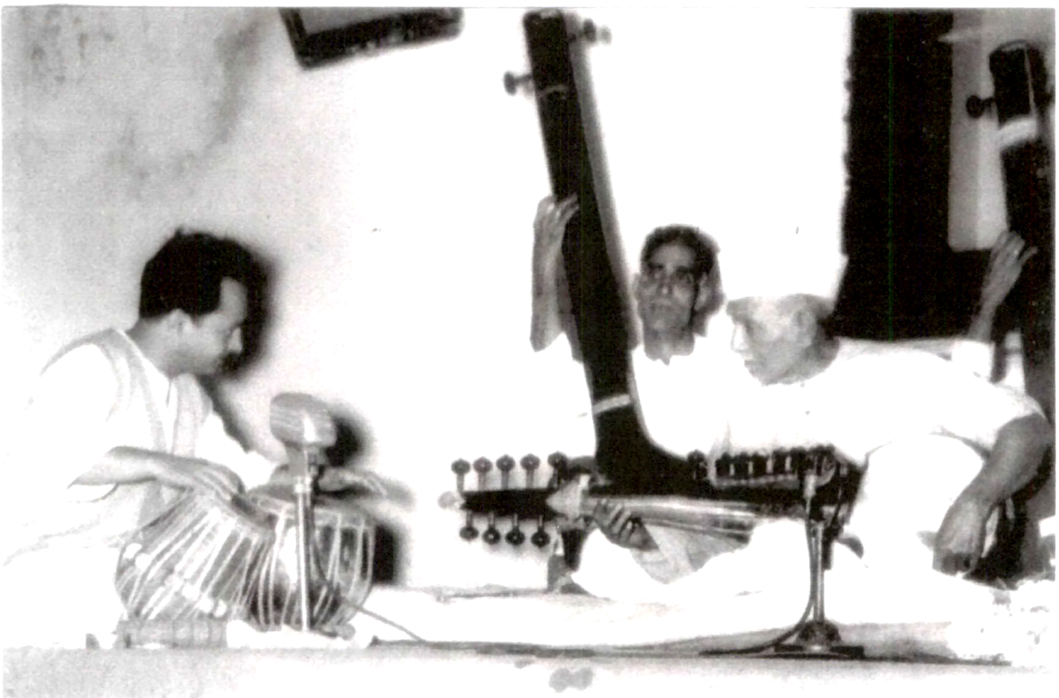

उस्ताद अल्लाउद्दीन खाँ साहब के साथ प्रो. सुधीरकुमार सक्सेना

उस्ताद सलामतहुसेन, नजाकतहुसेन, पाकिस्तान के साथ प्रो. सक्सेनाजी

पंडीत तीवारीजी, पटना के साथ प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी

उस्ताद गुलाम साबीर खाँ दिल्ली के साथ प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी

पंडीत मधुकर पेडणेकर, मुंबई के साथ प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी

पंडीत नारायण प्रसाद, जयपुरवाले के साथ प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी

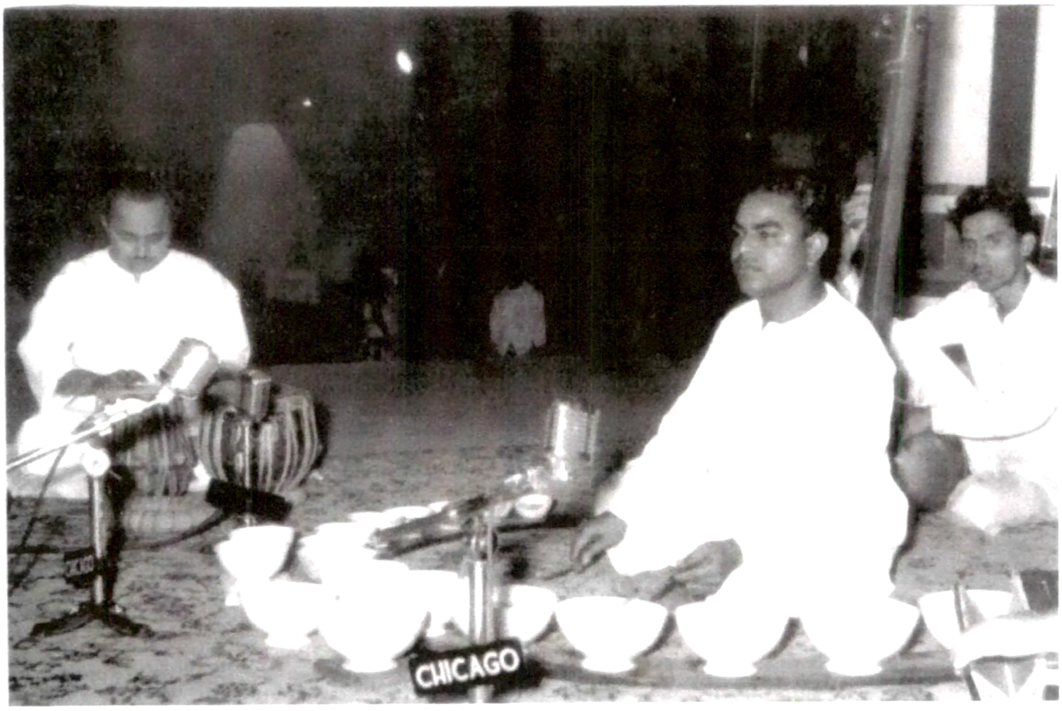

पंडति रामराव परसवारजी, मुंबई के साथ प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी

उस्ताद इशलीक अहेमदखान साहब के साथ प्रो. सुधीरकुमार सक्सेना

संगीत रसराज शीवकुमार शुक्ल के साथ प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी

अर्केस्ट्रा संचालन करते प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी

The Times of India
4-9-'70.

Dr. M. R. Gautam of Banaras Hindu University giving a Hindustani vocal recital at the Bhuj town-hall on Saturday last. He is accompanied on the tabla by Mr. Sudbir Kumar Saxena of the College of Indian Music. Baroda. The programme was simultaneously broadcast over AIR, Bhuj.

(૧) મુંબઈના વિખ્યાત કલાકાર પંડિત જસરાજ શાસ્ત્રી કંઠય સંગીત રજુ કરી રહ્યા છે. તબલા સંગત સુધીરકુમાર સકસેના........ (૨) કલકત્તાના પ્રખ્યાત વાયોલીન વાદક શ્રીમતી શિશિરકાનાધર ચાધરી વાયોલીન પર માલકોષ રજુ કરી રહ્યા છે......... (૩) શ્રોતાવૃંદનું એકચિત્તે શ્રવણ.......

આકાશવાણી સંગીત સભામાં

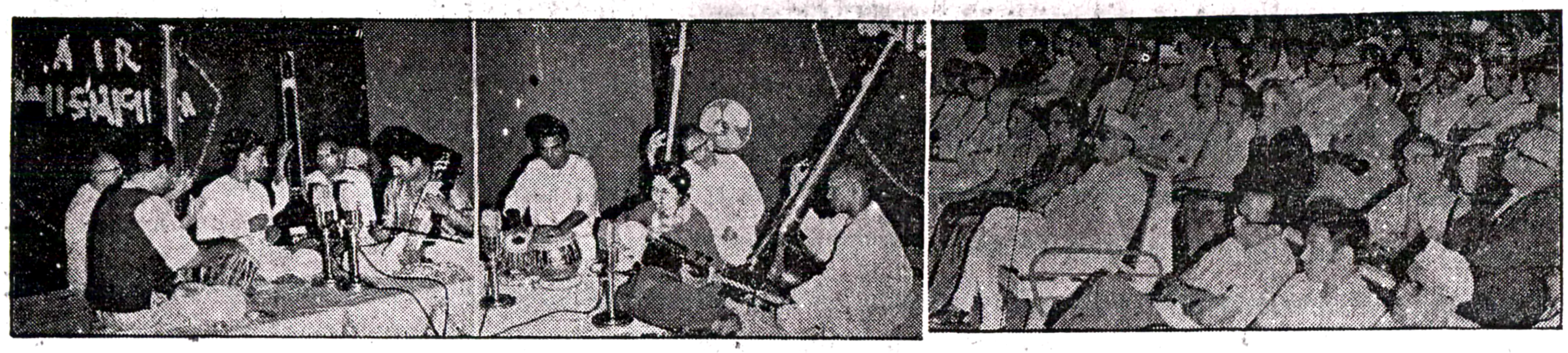

સુરતમાં ઉસ્તાદ ફૈયાઝખાંની ૨૦મી પૂણ્યતીથીના અવસરે આકાશવાણી અમદાવાદ--વડોદરા યોજીત શાસ્ત્રીય સંગીત સભામાં શ્રોતાજનને સંગીતથી પ્રભાવીત કરી રહેલા શ્રી શરાફત હુશેનખાં બીજા ચિત્રમાં સરોદવાદન કરી રહેલા કુમારી ઝરીન દારૂવાલા નજરે પડે છે. ત્રીજા ચિત્રમાં કલેક્ટર શ્રી કે. જી. રામનાથન, મેયર શ્રી શાસ્ત્રી, માસ્ટર વંસત વિગેરે સાથે શ્રાતાજનો નજરે પડે છે.